गणपति प्रकाश | By Lakhbir Singh Lakkha

एक रोज़ माता पारवती ने मन में किया ध्यान
उबटन मली शरीर पे करने को माँ स्नान
मलने के बाद उस मैल को जमा कर लिया
और फेंकने को माँ ने इरादा कर लिया
नहीं थे भोलेनाथ उस दिन अपने स्थान पे
माँ पारवती खो गई बाबा के ध्यान में
लेकर उसी मैल का एक पुतला बनाई
जब हो गया तैयार माँ मन में हरषाई
पुतले को देख मन में जगा ममता का भण्डार
और मन ही मन में कर लिया एक पुत्र का विचार
गर इसमें प्राण डाल दू ये अच्छा रहेगा
फिर डाल कर के प्राण माँ ने ध्यान से देखा
पुतले में आये प्राण, बना सुन्दर एक बालक
और छू के चरण मैया के बोला मचल कर
क्या है आदेश मैया बतलाइये हमें
मुख चूम कर ले गोद में माता लगी कहने
बेटा तू पहरा देना अंदर मैं नहाऊं
आना नहीं अंदर जब तक मैं बुलाऊँ
और आने नहीं देना किसी को भी तुम मेरे लाल
सुन करके माँ की बात खड़े पहरे पे गौरी लाल
खड़े थे चौकन्ना होकर इधर आ गए शंकर
जाने लगे अंदर तो उसने रोका डपट कर
अरे ठहर .....
ऐ जोगी ऐ सपेरे रुक
ठहर ठहर जोगिया सपेरा
ठहर जा तू हुक्म है ये मेरा
अरे कौन है तू जाता है बिन पूछे अंदर
ठहर जा तू हुक्म है ये मेरा
रुक ठहर जा तू हुक्म है ये मेरा
ठहर जा तू हुक्म है ये मेरा

बालक ने कहा .....
वाह क्या रूप मदारी का तू बनाया है
जाने किस बिल से तू ये सांप पकड़ लाया है
गले में एक है दो बाँहों में लटकाये हो
और ये चाँद चुराकर कहाँ से लाये हो
किसलिए हाथ में त्रिशूल को चमकाते हो
इसी डमरू से क्या सांपो को तुम नचाते हो
बिना बताये अंदर कहीं तू जायेगा
यकीन जानना यहीं पे मारा जायेगा
क्या समझता है तू इसको अपना डेरा
काल क्या मंडरा रहा है तेरा
अरे कौन है तू जाता है बिन पूछे अंदर
ठहर जा तू हुक्म है ये मेरा
रुक ठहर जा तू हुक्म है ये मेरा
ठहर ठहर जा तू हुक्म है ये मेरा

बालक की बात सुनकर भोलेनाथ क्रोध में आ गए

सुनके बात आए क्रोध में भोले शंकर
बिना विचारे ही त्रिशूल को मारा कसकर
कटा बालक का सर तो जाने कहा हो गया लो
मरा बालक को देख शांत हुआ उनका क्रोध
गए अंदर तो चौंक करके बोली पारवती
किस तरह आये रोका न कोई कैलाशपति
बोले भोले मैं उसके सर को काट आया सती
वो तो खुद को ही समझ रहा था कैलाशपति
सुनके बाबा की बात गिर पड़ी चकरा के माँ
पुत्र बिन किस तरह जियूँगी तू मुझको बता
क्यूँ मार दिया तुमने लाल मेरा
घर में मेरे छा गया अँधेरा
बिन बालक तड़पुँगी सारा जीवन भर
मार दिया तुमने लाल मेरा
भोले मार दिया तुमने लाल मेरा
क्यूँ मार दिया तुमने लाल मेरा

माँ की ऐसी हालत देख कर भोलेनाथ अपने गणो को हुक्म दिए, जाओ

बोले फिर बाबा गण जनो को सब जाओ फ़ौरन
काट कर लाओ ऐसा सर जो जन्मा इस क्षण
और पीठ पीछे हो उसकी माता की ऐसा सर हो
कोई भी प्राणी हो या जीव किसी का सर हो
गणो ने देखा तो हथिनी को जनम दे पाया
पीठ पीछे किये हथिनी की भोले माया
गणो ने काट लिया सर नहीं देर किये
भोले जी हाथी का सर पल भर में जोड़ दिए
नायक बना दिया गणो का मेरे भोले
रख दिए नाम गणपति और माँ से बोले
गौरी ..
रिद्धि सिद्धि वाला पुत्र तेरा
इसे आशीर्वाद है ये मेरा
जो भी आएगा इसके दर पे गौरी
मिटे उसके मन का अँधेरा
हाँ मिटे उसके मन का अँधेरा
जीवन में होगा सवेरा
गौरा मिटे उसके मन का अँधेरा
जीवन में होगा सवेरा

https://bhaktivandana.com/lyrics/%e0%a4%97%e0%a4%a3%e0%a4%aa%e0%a4%a4%e0%a4%bf-%e0%a4%aa%e0%a5%8d%e0%a4%b0%e0%a4%95%e0%a4%be%e0%a4%b6-by-lakhbir-singh-lakkha/